भक्ति आंदोलन का अखिल भारतीय स्वरूप और गुजराती भक्त कवि नरसिंह मेहता

सावन कुमार*

प्रस्तावना– भक्ति आंदोलन दक्षिण भारत से शुरू होकर संपूर्ण भारत में फैला। सगुण.निर्गुण, शैव.वैष्णव, राम.कृष्ण के विवाद के बीच भक्ति की परंपरा किसी नकिसी रूप में देश भर में फैली। उत्तर भारत में मजबूती से फैले इस आंदोलन के साथ महाराष्ट्र में ज्ञानेश्वर, नामदेव, तुकाराम और रामदास जैसे संत जुड़े। बंगाल में चंडीदास और चैतन्य महाप्रभु तथा पंजाब में गुरु गोविंद सिंह ने भक्ति काव्य की परंपरा को मजबूत किया। गुजराती साहित्य में नरसिंह मेहता का नाम भी इस क्रम में शामिल किया जाता है। कृष्ण भक्ति परंपरा को मजबूती देने में विद्यापति, महाप्रभु चैतन्य, वल्लभाचार्य, मध्वाचार्य, निंबार्काचार्य, हितहरिवंश और स्वामी हरिदास के नाम अग्रणी हैं। नरसिंह मेहता ने अन्य कृष्ण भक्त कवियों की तरह शुद्धाद्वैतवाद, द्वैताद्वैतवाद, द्वैतवाद जैसी दार्शनिक जटिलता से भरसक बचकर सहज प्रेम और प्रपत्ति पर ही अपना ध्यान केंद्रित रखा।

विषय.प्रवेश– नरसिंह मेहता सगुण भक्ति काव्य की कृष्णाश्रयी शाखा के महत्वपूर्ण कवि हैं। भक्ति.भावना को निरूपित करने में इनका मुख्य ध्यान प्रेम तत्व पर ही रहा है। उन्होंने इसी प्रेम तत्व के महत्व को दर्शाते हुए कहा है कि जिस ईश्वर का दर्शन हम यज्ञ, योग, ध्यान और अनेक प्रकार के व्रत और उपवास से अपने शरीर को कष्ट पहुँचाकर स्वप्न में भी नहीं पा सकते हैं, उस ईश्वर को हम प्रेम की दृष्टि से निरख सकते हैं –

''यज्ञ यागे करी, योग ध्याने धरी, बहु व्रत आदरी देह कष्टे,
तो य जे श्रीहरि स्वप्ने नव पेखीओ, ते हरि निरखीओ प्रेम दृष्टे।''[1]

नरसिंह मेहता ने अपने काव्य में कृष्ण के साथ अनेक संबध स्थापित किए हैं। उन्होंने कृष्ण को कभी माता.पिता के रूप में, कभी स्वामी के रूप में, कभी पति के रूप में तो कभी सखा के रूप में देखा है, लेकिन उनकी भक्ति मुख्य रूप से गोपी या सखी भाव से प्रकट हुई है क्योंकि उनकी भक्ति के मूल में प्रेमलक्षणा है। प्रेम के महत्व को उन्होंने अपने काव्य में इस प्रकार दर्शाया है–

''प्रेमरस पाने, तु मोरना पिच्छधर ! तत्वनुं टूंपणु तुच्छ लागे,
दुबला ढोरनुं कूशके मन चले, चतुरधा मुक्ति तेओ न मागे।
प्रेमनी बात परीक्षित प्रीछयो नहीं, शुकजीओ समजी ने रस संताड्यो

***पीएच.डी., हिंदी विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना**

ज्ञान वैराग्ये करी ग्रंथ पूरो कर्यो, मुक्तिनो मार्ग सुधो देखाड्यो।''[2]

सखीभाव से की गई उपासना के अंतर्गत हरि प्रेमस्वरूप है और हरि मिलन का एक मात्रा साधन भी प्रेम को ही स्वीकृत किया जाता है। जब हर साधन से हरि मिलन दुर्लभ हो जाता है तो सखी भाव से ही मिलन संभव होता है। इस भाव में उपासक अपने को नारी मानकर उपासना करते हैं। उनके लिए उनके आराध्य अर्थात् कृष्ण एक मात्रा पुरुष हैं और बाकी सभी नारियाँ– 'नरतैंयाचा स्वामी ! पुरुष अेक तुं, अवर पुरुष सहु नारी।' नरसिंह मेहता ने नारी भाव की उपासना को अनेक बार रेखांकित किया है–

''सार मां सार अवतार अबला तणो,
जे बले बलभद्र वीर रीझे,
पुरुष पुरुषारथे शुं सरे, हे सखी ?
तेणे नव नाथनुं काज सीझे।''[3]

नरसिंह मेहता की भक्ति भावना में राधा के विशेष महत्व को देखा जा सकता है। उन्होंने राधा के शक्ति रूप की वंदना की है। 'सुरतसंग्राम' के अंतर्गत उन्होंने राधा के शक्ति रूप का दिग्दर्शन कराते हुए कृष्ण से निवेदन किया है कि वे राधा की शरणागति स्वीकार कर ले–

''माव जी मानीए, शीख दउं छानी रे,
कान जी कामनी दर्प हरशे।''[4]

राधा की उत्पत्ति के मूल में 'आराधना' है। अर्थात् राधा को भी एक गोपी के रूप में देखा गया है जो कृष्ण की आराधना करती है– कृष्णेनाराध्यते इति राधा। अतः राधा को भक्त रूप में भी अक्षुण्ण स्थान प्राप्त है। नरसिंह मेहता ने भी राधा को कृष्ण भक्त के रूप में चित्रित किया है–

''अे रसनो स्वाद शंकर जाणे, के जाणे शुकजोगी रे
कोईअेक जाणे ब्रजनी वनिता, भणे नरसैंयो भोगी रे''[5]

अर्थात् कृष्ण भक्ति के रस का स्वाद शंकर और शुकजोगी को छोड़कर अगर कोई जानता है तो वह ब्रज की एक वनिता है और वह वनिता कोई और नहीं, राधा है। कृष्ण भक्ति काव्य में कृष्णलीला को अन्योक्ति रूप में भी ग्रहण किया जाता है। इसके संदर्भ में कहा जाता है कि गोपियाँ आत्मा हैं और कृष्ण परमात्मा। रासलीला में गोपियों से कृष्ण का मिलन ही आत्मा का परमात्मा से मिलन है। नरसिंह मेहता ने राधा और कृष्ण की लीलाओं का वर्णन बहुत ही सुंदर और सरस रूप में किया है। कृष्ण का मुख देखकर राधा दिवाली मनाने लगती है–

''आज मारे दीवाली रे दीवाली, मारे घेर आव्या वनमाली रे
घणा दिवस नो ताप निवार्यो, हूँ ने प्रेमे बोलावी रे।''[6]

भक्ति साहित्य के संदर्भ में 'राम' शब्द का बार बार उल्लेख होता है। राम

नाम अर्थात् प्रभु नाम स्मरण उपासना का एक महत्वपूर्ण अंग है। नरसिंह मेहता ने भी राम.नाम की महत्ता को स्वीकार किया है। प्रेमलक्षणा भक्ति में राम.नाम की महिमा को उन्होंने अनेक स्थानों पर वर्णित किया है–

''मन् ! तुं मेलव महानिधि रे, जेनुं रतन अमूलक नाम रे,
भर भंडार ने सार कर संग्रह, सारे सघलां काम रे।
चोर न चोरे, अगन बाले, धूरत को न धुतारे रे,
देहडी तजतां साथे आवे, अंतकाले उगारे रे।
अे धनाने महिमा छे मोटो, शुक सनकादिक जाणे रे,
कांईक कृष्ण कृपा अनुसारे नागर नरसैंयो बखाणे रे।''[7]

अर्थात् वे अपने मन से कहते हैं कि तुम अमूल्य रतन राम.नाम पर ही एकाग्र रहो। इसी अमूल्य रतन से अपने भंडार को भरते रहो। सिर्फ इसी धन के संग्रह से ही जगत के सारे कार्य संपन्न हो जाएँगे। यह एक ऐसा रत्न है जिसे चोर चुरा नहीं सकता है और न ही आग जला सकती है, धूर्त भी इसे ठग नहीं सकता है। यह अनमोल धन हमारे शरीर त्यागने पर भी हमारे साथ परलोक तक जाएगा। अंतकाल में यह धन ही हमें उबारेगा। नरसिंह मेहता ने राम नाम को आधि, व्याधि और उपाधि तीनों तापों से मुक्ति दिलाने वाला माना है। वे कहते हैं कि राम नाम की महिमा बहुत भारी है। पूरा ब्रह्मांड उनका भजन करता है। शिव और सनकादिक उनका ध्यान धरते हैं–

''राम नाम नो महिमा मोटो, शिव सनकादिक ध्यान धरे,
पूरण ब्रह्म प्रभुजी ने भजतां त्रिविध ताप ते तुरत हरे।''[8]

इतना ही नहीं, नरसिंह मेहता अपनी इंद्रियों को भी राम.नाम.स्मरण के लिए प्रेरित करते हैं–

''प्रातः समे सूर उग्या पहेलां जो रे रसना मुख राम कहे
हां रे हां रे कृष्णने तुं भज नामे, जगमां तारुं नाम रहे।
केसरी घूर्ये जेम मृग त्रासे, रवि ऊग्ये जेम तिमिर टले।''[9]

वे अपने मुँह और जीभ को रवि के उदय के पूर्व राम का नाम लेने के लिए प्रेरित करते हैं। उनका मानना है कि जिस प्रकार सूर्य के उदय होने से अंधकार मिट जाता है और सिंह को देखकर मृग भाग खड़ा होता है, उसी प्रकार प्रातः काल राम. नाम के स्मरण से मनुष्य के सभी कष्ट दूर हो जाते हैं।

नरसिंह मेहता का मानना है कि लोगों को अगर इस संसार के आवागमन के चक्र से मुक्ति चाहिए तो उन्हें हरि का भजन करना चाहिए, इसलिए वे लोगों को सलाह देते हैं–

'भणे नरसैंयो : तमे प्रभु भजी लो, आवागमन नो फेरो टले।'

भक्ति के अंतर्गत कुछ बाधक तत्व के होने की भी बात उठाई गई है।

इसी के तहत माया, शैतान आदि की कल्पना की गई है। इन बाधक तत्वों के भिन्न भिन्न अर्थात् छोटे.बड़े स्वरूप हो सकते हैं। प्रभु भक्ति में बाधाएँ डालने वाले लोग नरसिंह मेहता की दृष्टि में त्याज्य हैं–

''नारायण नुं नाम लेतां वारे तेने ततीअे रे
मनसा वाचा कर्मणाअे श्रीलक्ष्मीवर ने भजीअे रे....
कुल ने तजीअे, कुटुंबने तजीअे, तजीअे, माँ ने बाप रे
भगिनी, सुत, दारा ले तजीअे, तेम तजे कांचली साप रे
प्रथम पिता प्रह्लादे तजि या नव तजियुं हरिनुं नाम रे
भरत.शत्रुघने माता तजियां, नव तजिया श्रीराम रे
ऋषि पत्नी अे श्रीहरि ने काजे तजिया निज भरथार रे
ते माटे कोई दोष न लाग्यो, पामी पदारथ चार रे
ब्रजवनिता विट्ठल ने काजे साव तजी वन चाली रे''[10]

अर्थात् नारायण का नाम लेने में जो बाधाएँ पहुँचाता है उसका त्याग कर देना चाहिए। मन, वचन और कर्म से लक्ष्मीपति का भजन करना चाहिए। कुल, परिवार, माता पिता, बेटी, बेटा और पत्नी भी अगर बाधाएँ डालती हो तो उन्हें उसी तरह त्याग देना चाहिए, जिस तरह साँप केंचुली का त्याग करता है। प्रह्लाद ने पिता का त्याग कर दिया पर हरि का नाम स्मरण नहीं छोड़ा। भरत और शत्रुध्न ने भी अपनी माता का त्याग कर दिया मगर श्रीराम का त्याग नहीं किया। ऋषि पत्नी ने प्रभु नाम स्मरण के लिए अपने पति का त्याग कर दिया और इसके लिए उसे कोई पाप भी नहीं लगा। ब्रज वनिता भी विट्ठल के लिए सब कुछ त्याग कर वन चली गई। नरसिंह के प्रभु नाम स्मरण में लिप्त देखकर कई लोग नाराज होते थे और भक्ति में बाधा पहुँचाने का प्रयास करते थे।

भक्ति साहित्य में प्रभु नाम स्मरण की महत्ता को विशेष रूप से स्वीकार किया गया है। नरसिंह मेहता के काव्य में भी हरि नाम अर्थात् राम नाम का बार बार उल्लेख हुआ है। वे भक्ति और उपासना के सभी मार्गों में राम नाम को सर्वश्रेष्ठ समझते हैं और अपने आप को वे राम.नाम का विक्रेता मानते हैं–

''संतो ! अमे रे वहेवारिया रामनाम ना
वेपारी आवे दे बधा गामगाम ना
अमारू वसाणुं साधु सहु कोने भावे
अढारे वरण जेने वहोरवाने आवे
लाख करोडे लेखां नहि, ने पार विनानी पूंजी
वहोरवुं होय तो वहोरी लेजी, कस्तूरी छे सोंधी
आवरो ने खाता वहीमां लक्ष्मीवर नुं नाम
चिट्ठी मां चतुर्भुज लखिया, नरसैंया नु काम''[11]

अर्थात् नरसिंह कहते हैं संतो ! मैं राम नाम का व्यापारी हूँ। राम नाम की खरीद के लिए दूर दूर के गाँव से लोग आते हैं। मेरा सौदा सभी को पसंद है। लाख करोड़ का तो कोई लेखा जोखा नहीं है, पूँजी तो अपार है। कस्तूरी सोंधी और खुशबूदार है, अगर आपको लेना है तो खरीद लीजिए। खाता और बही में लक्ष्मी जी के पति का नाम है और चतुर्भज भगवान विष्णु ने स्वयं अपनी चिट्ठी में नरसिंह का नाम लिखकर इस व्यापार का आदेश दिया है।

विनय के पदों की रचना के क्रम में नरसिंह मेहता ने संकट की घड़ी में अपने आराध्य को पुकारा है। भक्ति काव्य के अंतर्गत शरणागति के कुछ प्रकारों का उल्लेख है– अनुकूल का संकल्प, प्रतिकूल का त्याग, गोप्तृत्व वरण, रक्षा का विश्वास, कारुण्य और आत्म निक्षेप। भक्त अपने व्यक्तिगत दुःख से उबरने के लिए अपने आराध्य की शरणागति की अपेक्षा रखता है। साधना के सोपानों– अनुताप, आत्म.संयम, वैराग्य, दारिद्रय, धैर्य, ईश्वर विश्वास और संतोष–के अंतर्गत भी 'ईश्वर.विश्वास' को स्वीकार किया जाता है। भक्त को अपने आराध्य पर पूर्ण विश्वास होता है और यह जानकर वह शरण में जाता है। नरसिंह मेहता अपने आराध्य से कहते हैं कि हे गोपाल ! मैं दीन हूँ और तुम्हें दयालु और दीनानाथ जानकर तुम्हारे चरणों की शरण में आया हूँ। वे कृष्ण को भक्तपालक होने की याद दिलाकर अपने उद्धार की विनती करते हैं–

''देवना देव, सुण देवकीनंदना ! भक्तपालक अेवुं बिरद तारे
अेम जाणी घटे त्यम करो, त्रीकमा ! अवर अधिपति नथी कोई मारे।
द्रौपदी ताहरे नामे पट पामिया, अविचल पद ध्रुव पाम्यो आगे
अेवुं जाणी नरसियो तब नाम जपेः राख चरणे, रखे लाज लागे।''[12]

हे देवकीनंदन ! हे देव ! सुनो ! तुम तो भक्तपालक हो। तुमने कई लोगों का उद्धार किया है। तुमने द्रौपदी की लाज बचाई है। तुमने ध्रुव को अविचल पद दिया है। तुम्हारी इसी महिमा के कारण नरसिंह तुम्हारा नाम जप रहा है।

नरसिंह मेहता की भक्ति भावना के अंतर्गत वैष्णव भक्ति का प्रभाव भी परिलक्षित होता है। उनकी दृष्टि में सच्चा वैष्णव वही है जो न सिर्फ प्रभु से प्यार करता हो, बल्कि मानव जाति से प्यार करता हो। भक्ति के अंतर्गत विविधताओं के बीच मानव जाति से प्यार या मनुष्य मात्रा की समानता पर जोर, जाति और धर्म के बंधन का विरोध, सबके कल्याण की कामना आदि बातें भक्ति आंदोलन को अखिल भारतीय स्तर पर एक कर देती हैं। पराये पीर में शामिल होने वाले ही उनकी नजर में वैष्णव है–

'''वैष्णव जन तो तेने कहिये जे पीड़ पराई जाणे रे,
परदुःखे उपकार करे ने मन अभिमान न आणे रे,
सकल लोकमां सहुने वंदे, निंदा न करे केनी रे,
वाच काछ मन निश्चल राखे, धन्य धन्य जननी तेनी रे

समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी, परस्त्री जेने मात रे
जिह्वा थकी असत्य न बोले, परद्रव्य न झाले हाथ रे।''[13]

नरसिंह मेहता की भक्ति भावना का मूल आधार जनमानस और उसका समाज है। नरसिंह मेहता के काव्य की प्रसिद्ध अध्येता डॉ. संध्या गुप्ता ने बहुत ही सटीक मूल्यांकन करते हुए उनके संबंध में लिखा है–''उन्होंने अपने भक्ति काव्य के अंतर्गत विस्तार से सामाजिक विकृतियों पर कुठाराघात किया है। मानव मात्र का पथ प्रशस्त करने के लिए आदर्श मनुष्य के उत्तम गुणों की सृष्टि की है। जन. जन में नवीन चेतना और जागृति का संचार किया है। बाह्याडंबर और मिथ्याचार का ठोस शब्दों में दृढ़ता के साथ खंडन किया है। नरसिंह का भक्ति काव्य जनमानस को पवित्र और निर्मल बनाकर उसे सही मार्ग पर चलने को प्रेरित करता है। आत्मिक शांति और ज्ञान का आलोक प्रदान करता है।''[14]

निष्कर्ष–भक्ति आंदोलन को अखिल भारतीय स्वरूप प्रदान करने वाले सारे तत्व नरसिंह मेहता के काव्य में परिलक्षित होते हैं। अनुकूल का वरण, प्रतिकूल का त्याग, प्रभु नाम स्मरण, प्रेम की प्रधानता, विनय की भावना, सत्संग, समन्वय, कीर्तन, बाह्याडंबर और समाज के बनावटी ढाँचे का विरोध, मानव मात्रा में विश्वास आदि ऐसे तत्व हैं जिनके कारण संपूर्ण भक्ति आंदोलन दक्षिण से उत्तर तक एक सूत्रा में बँध सका।

संदर्भ–

1. जेसलपुरा (सं.), डॉ. शिवलाल तुलसीदास, नरसिंह मेहतानी काव्य कृतिओ, पृष्ठ–361
2. वही, पृष्ठ–390
3. वही, पृष्ठ–361
4. देसाई (सं.), इच्छाराम सूर्यराम, नरसिंह मेहता कृत काव्य संग्रह, पृष्ठ–99
5. जेसलपुरा (सं.), डॉ. शिवलाल तुलसीदास, नरसिंह मेहतानी काव्य कृतिओ, पृष्ठ–359
6. वही, पृष्ठ–243
7. वही, पृष्ठ–370
8. वही, पृष्ठ–373
9. वही, पृष्ठ–370
10. वही, पृष्ठ–367
11. वही, पृष्ठ–378
12. वही, पृष्ठ–46
13. वही, पृष्ठ–382
14. गुप्ता, डॉ. संध्या, काव्यशिला पर विद्यापति और नरसिंह मेहता, पृष्ठ–133